प्रातःक्लास 22/4/68 ओमशान्ति " शिवबाबा याद है?"

ओमशान्ति। याद की यात्रा को बच्चों को भूलना नहीं है। सुबह को जैसे कि यह प्रैक्टिस करते हैं। उसमें वाणी नहीं चलती है; क्योंकि वह है ही निर्वाणधाम जाने की युक्ति। पावन बनने के सिवाय तो बच्चे जा नहीं सकते हैं। उड़ नहीं सकते हैं। यह भी समझते हो सतयुग जब होता है तो कितने ढेर आत्माएं उड़ जाती हैं। अभी तो कितने करोड़ आत्माएं हैं। वहां (सतयुग) में जाकर कुछ लाख बचते हैं। बाकी सभी उड़ जाते हैं। ज़रूर कोई तो आकर पर देते हैं ना। इस याद की यात्रा से ही आत्मा पवित्र बनती है। इनके सिवाय और कोई उपाय नहीं है पावन बनने का। पतित–पावन भी एक बाप को ही कहते हैं। फिर कोई ईश्वर कहते वा परमात्मा कहते, भगवान कहते। है तो एक ही। अनेक नहीं है। बाप सभी का एक है। लौकिक बाप तो सभी का अपना–2 है। सतयुग में भी लौकिक बाप सभी का अपना–2 है। बाकी यह पारलौकिक बाप तो सभी का एक ही है। वह एक जब आते हैं तो सभी को सुख देकर जाते हैं। फिर वहां सुख में उनको याद करने की दरकार नहीं रहती; इसलिए गायन भी है दुःख में सिमरण सब करे सुख (में) करे न कोय। वहां तो दुःख है नहीं। वह भी पास्ट हो गया है। अभी बाप बैठ कर पास्ट, प्रेज़ेन्ट, फ्युचर का राज़ बताते हैं। झाड़ का पास्ट, प्रेज़ेन्ट फ्युचर बहुत सहज है। पास्ट तो तुम जानते हो कि कैसे बीज से झाड़ होता है फिर वृद्धि को पाते–2 आखिरीन अंत आ जाती है। इसको कहा जाता है आदि, मध्य, अंत। यह है वैरायटी धर्मों का, वैरायटी फीचर्स का झाड़। सभी को फीचर्स अपने–2 हैं। फूलों में तुम देखेंगे जैसा–2 झाड़ है, वैसे–2 उनसे फूल निकलते हैं। उन सभी फूलों के फीचर्स एक रहेगा; परन्तु इस मनुष्यसृष्टि रूपी झाड़ में वैरायटी है। उसमें हरेक झाड़ की अपनी–2 शोभा होती है। इस झाड़ में तो अनेक प्रकार की शोभा है। जैसे बाप समझाते हैं श्याम–सुन्दर। यह देवी–देवताओं के लिए ही है। जबकि वह सतोपधान से तमोप्रधान बनते हैं तो वही सुन्दर और फिर श्याम बनते हैं। ऐसे श्याम–सुन्दर और कोई धर्मों में नहीं है; क्योंकि ऐसे भी धर्म हैं जो काले ही काले हैं। अफ्रिका के तरफ कितने काले होते हैं। उन्हों के फीचर्स भी देखो। जापानियों के फीचर्स, यूरोपियन के फीचर्स, चीनियों के फीचर्स देखो। इण्डिया वालों के फीचर्स बदली हो जाते हैं। इन्हों के लिए ही गाया हुआ है श्याम–सुन्दर। यह और कोई धर्म के लिए गायन नहीं है। ऐसे भी नहीं कि काले लोग पहले गोरे थे, फिर काले हुये हैं, नहीं। उन्हों के फीचर्स ही ..... हैं। यह मनुष्य सृष्टि का झाड़ है। उसमें वैरायटी धर्म हैं। वह सभी कैसे नम्बरवार आते हैं यह अभी तुम बच्चों को नॉलेज मिलती है। सन्यासी तो यह बातें समझा न सकें। वह तो है ही भक्तिमार्ग वाले। यह 5000वर्ष का कल्प है। उनको वृक्ष कहो वा दुनियाँ कहो। आधा में है भक्ति, जिसको रावण राज्य कहा जाता है। 5 विकारों का राज्य चलता है। काम चिक्षा पर चढ़ कर पतित, सांवरे बन जाते हैं। रावण सम्प्रदाय के चलन और इन (ल.ना.) सम्प्रदाय के चलन में रात–दिन का फर्क है। मनुष्य इन्हों की महिमा गाते हैं। अपन को नीच, पापी कहते हैं। यह भी बाप ने समझाया है तुम आपे ही पूज्य और आपे ही पुजारी बनते हो। वह फिर समझते हैं भगवान ही पूज्य बनता है। भगवान ही पुजारी बनता है। अनेक प्रकार के मनुष्य हैं ना। भक्ति तो तुमने बहुत की है। पुनर्जन्म लेते भक्ति करते आये हो। पहले–2 होती है अव्यभिचारी भक्ति। जिसने तुमको मनुष्य से देवता बनाया है। पहले–2 उनकी. भक्ति शुरू होती है। फिर भक्ति व्यभिचारी होती जाती है। ताकि अंत में बिल्कुल ही व्यभिचारी बन जाती है। तब फिर बाप आकर अव्यभिचारी ज्ञान देते हैं। वह तो शास्त्रों को ही ज्ञान समझते हैं। बाप कहते हैं भक्तिमार्ग के शास्त्रों का तुमको कितना घमण्ड है। यह है भक्ति का घमण्ड। भक्ति का घमण्ड भी है तो ज्ञान का भी घमण्ड है। भक्ति के घमण्ड को दुर्गति के घमण्ड कहा जाता है और यह ज्ञान का घमण्ड है सद्गति का; क्योंकि ज्ञान से ही सद्गति होती है। इनका जब तक पता न है तो भक्ति के ही घमण्ड में रहते हैं। यह पता न है कि ज्ञान का सागर एक ही परमात्मा बाप है। भक्ति में कितने वेद–शास्त्र आदि पढ़ते हैं, धारण करते हैं। जबानी भी सुनाते हैं। यह सभी है भक्ति। कितना

विस्तार है भक्ति का। शोभा है ना। बाप कहते हैं यह रुण्ड के पानी मिसल शोभा है। वह पानी दूर से ऐसा चमकता है जैसे कि चांदी। हिरण को प्यास लगती है तो उस रुण्ड के पानी तरफ भागता है तो उसमें ही फंस जाते हैं। भक्ति भी ऐसी है। सभी उसमें फंसते गये हैं। अभी फंस–2 कर एकदम गले तक फं(स) गये हैं तो उससे निकालने में बच्चों को कितनी मेहनत लगती है। वि(घ)न भी बहुत पड़ते हैं; क्योंकि बाप पवित्र बनाते हैं। द्रौपदी ने भी इस पर ही पुकारा है ना। यह सारी दुनियां है ही द्रौपदियों, दुर्योधनों की। और फिर इस ख़्याल से कहेंगे तुम सभी पार्वतियां हो, अमर कथा सुन रही हो। थी द्रौपदियां, तुमको नंगन करते थे। अभी बाप अमरलोक लिए अमरकथा सुना रहे हैं। यह है मृत्युलोक; क्योंकि अकाले मृत्यु होती रहती है। बैठे–2 हार्टफेल हो जाते हैं। तुम हॉस्पिटल में भी जाकर समझाओ। यहां तुम्हारी आयु कितनी कम है। बीमार पड़ते हो। वहां बीमार होंगे ही नहीं। भगवानुवाच अपन को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो। औरों से सम्बन्ध मिटा दो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। फिर कब बीमार होंगे नहीं। काल खावेगा नहीं। आयु भी बड़ी होगी। इन देवताओं की आयु बड़ी थी ना। फिर बड़ी आयु वाले कहां गये? पुनर्जन्म लेते–2 आयु कम होती जाती है। यह सुख और दुःख का खेल है। इनको कोई भी जानते नहीं। रचयिता बाप को जानते तो रचना को भी जानते। सभी भक्ति के दुगर्ति में फंसे हुये हैं। भक्ति है दुबण। इसमें तो झांझ, मेला–मलाखड़ा आदि कुछ भी नहीं। वहां कुम्भ के मेले आदि में कितने मनुष्य जाकर इकट्ठे होते हैं स्नान करने। स्नान से तो कुछ भी होता नहीं है। रोज़ तुम स्नान करते हो। हर जगह पानी तो सागर से ही आता है। सबसे अच्छा पवित्र पानी तो कूआँ का होता है। उसमें तो कोई भी गंद आदि नहीं पड़ता। नदी में सारा किचड़ा पड़ता है। कूआँ का पानी तो नैचुरल ही शुद्ध होता है। तो उनसे ही स्नान करना चाहिए ना। पहले ऐसा रिवाज़ था। पीछे नदी का रिवाज़ निकला है। भक्तिमार्ग में स्वच्छता को पसंद ही नहीं करते हैं। अभी पुकारते हैं आकर स्वच्छ बनाओ। सभी छी–2 हैं। नानक ने भी उनकी महिमा गाई है। मूत पलीती कपड़ धोये। बाप ही आकर मूत पलीती को स्वच्छ बनाते हैं। पहले तो आत्मा को स्वच्छ बनाते हैं। वह लोग आत्मा को निर्लेप समझते हैं। तो बाप कहते हैं यह भक्तिमार्ग है ही अज्ञान मार्ग। घोर अंधियारा। इनको कहा जाता है आसुरी राज्य। वह है ईश्वरीय राज्य। यह है रावण राज्य; क्योंकि सृष्टि की उतरती कला है। गायन भी है चढ़ती कला सर्व का भला। सर्व की सद्गति हो जाती है। हे बाबा तेरे द्वारा सर्व का भला होता है। सतयुग में सभी का भला हो जाता। वहां भी शन्ति और एक राज्य है। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। अभी वह लोग माथा मारते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। उनसे जाकर पूछो कब आगे विश्व में शान्ति हुई है? कब थी, जो फिर मांगते हो। तुम थोड़ा जब समझाते हो तो फिर कहते हैं अभी 40 हज़ार वर्ष पड़े है फिर पीछे सतयुग आवेगा। मनुष्य घोर–अंधियारे में है ना। कहां 5000 वर्ष का सारा कल्प, कहां–2 यह एक कलयुग को ही 40 हज़ार वर्ष कह देते हैं। अनेक मतें अनेक बातें हैं। बाप आकर सच्च बताते हैं। जन्म भी 84 ही हैं। लाखों वर्ष हो तो मनुष्य जनावर आदि भी बन सके; परन्तु कायदा ही नहीं है। 84 जन्म मनुष्य का ही लेते हैं। उसका हिसाब–किताब भी बता देते हैं। यह नॉलेज तुम बच्चों को धार(ण) करनी है। ऋषि–मुनि आदि तो नेती–2 करते गये हैं अर्थात् हम नहीं जानते। तो नास्तिक ठहरे ना। ज़रूर फिर कोई आस्तिक भी होंगे। आस्तिक हैं देवताएं। नास्तिक है रावणराज्य। ज्ञान से तुम आस्तिक बनते हो। फिर 21 जन्मों का वर्सा मिल जाता है। फिर ज्ञान की दरकार ही नहीं रहती। अभह(अभी) है पुरुषोत्तम संगमयुग। जबकि हम उत्तम ते उत्तम पुरुष स्वर्ग का मालिक बन रहे हैं। इस जितना जो पढ़ेंगे उतना ऊँच बनेंगे। पढ़ेंगे, लिखेंगे होंगे विश्व के मालिक। नहीं तो कम पद। वहां भी सफाई आदि करने वाले तो होंगे ना; परंतु (वह) राजाई है सुख की। यहां है दुःख की। आस्तिक बनते हैं तो सुख की राजाई करते हैं। फिर रावण आने (से)

नास्तिक बनते हैं। तो फिर दुःख होता है। भारत कितना सॉलवेन्ट था। अथाह धन था। सोमनाथ का मंदिर कितना भरी भ(ा)री बनाया हुआ था। मंदिर बनाने लिए ही इतने पैसे थे। तो खुद के पास कितने होंगे। यह सभी इतने पैसे कहां से मिली? शास्त्रों में दिखाया है सागर ने रत्नों की थाली भेंट की। अभी ज्ञान सागर तुमको रत्नों का थालियां भरकर देते हैं। अभी तुम्हारी झोली भर रही है। वह फिर शंकर के आगे जाकर कहते हैं भर दे–भर दे झोली कहते हैं। बाप को ही नहीं जानते। अभी तुम जानते हो बाप हमारी झोली भर रहे हैं। जितना जिसको चाहिए भरे। जितना अच्छी रीत पढ़ेंगे उतना ही स्कॉलरशिप मिलेगा। चाहे तो ऊँच ते ऊँच डबल सिरताज बनो। चाहे तो जाकर चण्डाल बनो। बहुत हैं जो फारकती, डायवोर्स भी दे देते हैं। फारकती बच्चे देते हैं, डायवोर्स स्त्री देती है पति को। यह भी ड्रामा में नूँध है। बाप कहते हैं मुझे कोई फिक्र नहीं। मैं तो फिक्र से फारग़ हूँ। तुमको भी कर रहा हूँ। फ़िक्र से फारग़ किदा सदगुरू.....स्वामी जो सभी का स्वामी अर्थात् बाप है, उनको मालिक भी कहते हैं। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा बेहद का टीचर भी हूँ। भक्तिमार्ग में तो अनेक टीचर्स अनेक विद्याएं पढ़ते हो। बाप जो तुमको पढ़ाते हैं यह तो नॉलेज सबसे न्यारी है। वह है ही ज्ञान का सागर । जानी जाननहार नहीं कहना। ऐसे बहुत कहते हैं आप तो सब कुछ हमारे अन्दर के जानते हो। बाप कहते हैं मैं कुछ नहीं जानता। तख़्त पर सिर्फ शिवबाबा बैठा है। और तो कुछ है नहीं। बाकी तो यह शरीर कचड़ा है। आत्मा निकल जाती है तो इस कचड़े को जलाया जाता है। आत्मा ही चीज़ है। कितनी छोटी बिन्दी है। यह भी किसको पता नहीं है कि आत्मा क्या चीज़ है। तब ही बाबा कहते हैं पहले तो आत्मा को समझो। फिर बाप को भी समझेंगे। बाप पहले–2 आत्मा का ज्ञान समझाते हैं। अपना परिचय देते हैं। आगे तुम जानते थे क्या कि आत्मा अविनाशी है? शालिग्राम बनाकर पूजा करते थे। फिर खलास कर देते। बाप कहते हैं यह सभी हैं गुड्डिडयों की पूजा। बेसमझी से करते हैं। जानते नहीं। न शिव को, न आत्मा को, न ल.ना. को जानते। सच्चों को भी नहीं जानते तो झूठों को भी नहीं जानते। बाप समझाते हैं यह भी कोई नई बात नहीं। फिर भी ऐसे होंगे। तुम बन्दर से मन्दिर लायक बनते हो। फिर बन्दर बनेंगे। सतयुग में थोड़े ही पता होगा हम फिर बन्दर बनेंगे। यह सिर्फ संगम पर ही पता है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जो अच्छी रीत समझते हैं वह औरों को धारण कराते हैं। बाप कल्याकारी है तो बच्चे भी बनते हैं। कोई तो औरों को दुबण से निकालते–2 खुद ही फंस पड़ते हैं। अपवित्र बन पड़ते हैं। की कमाई चट हो जाती है। काम की कमाई चट कर देती है; इसलिए बाप कहते हैं खबरदार रहना। काम चिक्षा पर न चढ़ना। काम चिक्षा पर चढ़ने से ही तुम काले बन गये हो। तुम कहेंगे हम ही गोरे थे फिर हम ही सांवरे बने हैं। हम ही देवता थे फिर नीचे उतरे। नहीं तो 84 जन्म कौन लेते? यह हिसाब–किताब बाप ही समझाते हैं। बाकी वह तो सभी है भक्तिमार्ग के शास्त्र और ढेर के ढेर गुरू। ज्ञान मार्ग लिए ज्ञान सागर तो एक ही है। वह गुरू तो अनेक हैं। स्त्री को कहते हैं यह पति तुम्हारा ईश्वर, गुरू है। उनकी आज्ञा पर चलना। पहले आज्ञा करते हैं काम कटारी की। यह तो बच्चे समझते हैं मेहनत करनी पड़ती है। आधा कल्प विषय सागर में पड़े हैं। उनसे निकलना मासी का घर नहीं। तुम थोड़ा भी ज्ञान देते हो तो उसका विनाश ही नहीं होता। प्रजा बनते हैं। कथा तो है सत्य नारायण बनने की। फिर प्रजा भी बनते हैं। थोड़ा जो समझ कर जाते हैं हो सकता है फिर आकर समझें। आगे चलकर मनुष्यों को वैराग्य भी बहुत होगा। जैसे श्मशान में मनुष्यों को वैराग्य होता है ना। श्मशान से बाहर निकले, खलास। तुम जब समझाते हो तो बहुत अच्छा–2 करते हैं। बाहर गया, बस। ज्ञान गुम। बाप को कहते हैं बस हम यह काम उतार कर आ जावेंगे। बाहर गया, माया (माथा) ही मूड़ लेती है। कोटों में कोऊ.... ....निकलते हैं। राज्यपद पाना इसमें मेहनत है। हरेक अपने दिल से पूछे बेहद के बाप को हम याद करते हैं। कहते हैं हम भूल जाते हैं। अरे, बेहद के बाप को भूल जाते हो! लौकिक बाप को कब नहीं भूलते। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।